पशुपालक मित्र

पशुपालन को समर्पित त्रिमासिक पत्रिका

वर्ष: 1 अंक : 2, जुलाई , 2021 कुल पृष्ठ: 14

Visit us: www.pashupalakmitra.in

पशुपालक मित्र

पशुपालन को समर्पित त्रिमासिक पत्रिका

संपादिकीय पैनल

प्रधान संपादक

डॉ. सतीश कुमार पाठक
असिस्टेंट प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

संपादक

पशु प्रजनन एवं मादा रोग विशेषज्ञ

1. डॉ.आशुतोष त्रिपाठी
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   स.व.प. कृषि वि.वि., मेरठ
2. डॉ. विकास सचान
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   दुवासू , मथुरा

पशु पोषण विशेषज्ञ

1. डॉ. दिनेश कुमार
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   जे.एन.के.वि.वि., जबलपुर

पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन विशेषज्ञ

1. डॉ. ममता
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   दुवासू , मथुरा

वर्ष:1 अंक:2 जुलाई, 2021

क्रमांक	लेख का शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	**पशु परिवहन और पशु कल्याण** : डॉ .ममता, डॉ .रजनीश सिरोही ,डा. दीप नारायण सिंह एवं डा. यजुवेंद्र सिंह	3-7
2.	**गर्भावस्था के समय गौवंश का रखरखाव** : डॉ. आशुतोष त्रिपाठी, डॉ. अतुल कुमार वर्मा एवं डॉ. मनीष कुमार शुक्ला	8
3.	**शूकर पालन: एक लाभदायक व्यवसाय :** डॉ. सतीश कुमार पाठक	9
4.	**राष्ट्रीय पशुधन मिशन (एनएलएम):** डॉ. सतीश कुमार पाठक	10-11
5.	**मुर्गियों की वर्षा ऋतु में देखभाल (Management of Poultry in Rainy Season):** डॉ. सतीश कुमार पाठक	12-13

नोट: लेख में वर्णित सूचनाओं का दायित्व लेखक का होगा, संपादक का नही ।

संपर्क सूत्र

प्रधान संपादक
डॉ. सतीश कुमार पाठक,
असिस्टेंट प्रोफेसर,
पशुशरीर रचना शास्त्र विभाग , पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान संकाय,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
बरकछा, मिर्जापुर-231001, उत्तर प्रदेश

ईमेल आई डी:
pashupalakmitra1@gmail.com

Visit us: www.pashupalakmitra.in

पशु परिवहन और पशु कल्याण

डॉ.ममता, डॉ.रजनीश सिरोही ,डा. दीप नारायण सिंह एवं
डा. यजुवेंद्र सिंह
दुवासु, मथुरा

पशुओं के परिवहन की प्रक्रिया को देखना महत्वपूर्ण होता है जबकि पशु प्रबंधन में यह एक उपेक्षित पहलू रहा है। पशुओं को उनके जीवन के किसी ना किसी स्तर पर यातायात के माध्यम से गुजरना पड़ता है, चाहे वह विक्रय के पश्चात किसी अन्य मालिक के स्थान पर हो अथवा पशुवध हेतु। कई बार परिवहन के दौरान कई जानवर घायल हो जाते हैं या मर जाते हैं। इसके अलावा, पशुवध के लिए नियत पशु घायल हो जाते हैं जिससे उनके माँस की गुणवत्ता मे गिरावट आती है और इससे पशुधन उद्योग को भारी नुकसान होता है।खराब परिवहन के परिणाम निम्न प्रकार से हो सकते हैं

खराब परिवहन और इसके परिणाम

➢ जब पशुओं को वध के लिए ले जाया जाता है, तो अल्पकालिक परिणाम जैसे कि शारीरिक, व्यवहार संबंधी, चोट या मृत्यु दर आदि को यातायात के परिणामों के आकलन के मापदंड के रूप मे उपयोग किया जाता है।

➢ परिवहन किए गए पशुओं में अंग खंडन तथा अन्य शारीरिक क्षति हो सकती है।

➢ जहा एक ओर यातायात के कारण रोगों का संचरण जैसे की ऍफ एम् डी या स्वाइन फीवर होता है। वहीं दूसरी ओर लंबी दूरी का परिवहन अव्यक्त संक्रमणों को भड़काने का कारण हो सकता है उदहारण के लिए पस्चुरेल्ला प्रजातियों के कारण होने वाले बुखार और गोजातीय श्वसन संक्रमणीय वायरस, आईबीआर वायरस और पैरेन्फ्लुएंजा वायरस आदि के संक्रमण का प्रवाह हो सकता है।

➢ लंबी यात्रा मे घंटों की खराब परिवहन स्थितियों में विशेष रूप से पशु का शारीरिक वजन कम हो सकता है।
खराब हैंडलिंग और परिवहन के कारण पशुओं मे लड़ाई का खतरा बढ़ता है जिसके कारण पशु घायल हो सकते हैं और यहां तक कि उनकी मृत्यु भी हो सकती है अक्सर ग्लाइकोजन की कमी, माँस की गुणवत्ता मे गिरावट के रूप मे परिणत होती है।

पशुओं के परिवहन से जुड़ी सुगढ़ कल्याणकारी पदतियों को अपनाने से तत्काल लाभ होता है क्योंकि जहाँ एक ओर मृत्यु दर में कमी आती है वहीँ दूसरी ओर प्राप्त होने वाले माँस की गुणवत्ता मे होने वाले ह्रास मे भी कमी आती है। अतः यह आवश्यक है की परिवहन और हैंडलिंग में शामिल लोगों को संबंधित जानवरों की जैविक क्रियाओं का ज्ञान हो, जिससे एक अनुकूल दृष्टिकोण विकसित हो सके। परिवहन के दौरान जानवरों का कल्याण, इस प्रक्रिया में शामिल सभी लोगों की संयुक्त जिम्मेदारी है, जिसमें पशु के मालिक और व्यापारी, व्यावसायिक एजेंट आदि शामिल होते है। उन सभी को अपनी जिम्मेदारी का वहन करना चाहिए।

पशु परिवहन संबंधित कल्याणकारी मुद्दे-

➢ पशु परिवहन बिचौलिये, कसाई, मालिक आदि आम तौर पर एक ही समय में विभिन्न स्थानों से पशुओं की खरीद करते हैं, जो विभिन्न श्रेणियों के जानवरों (युवा, बीमार, गर्भवती) को एक साथ ले जाते हैं। वे स्थानीय वाणिज्यिक वाहनों में बिना किसी आवश्यक परिवर्तन के द्वारा इन पशुओं को ले जाने का प्रयास करते हैं।
➢ अधिक लाभ तथा खर्च बचाने के लिए परिवहक प्राय विभिन्न आयु वर्ग के पशुओं की ओवरलोडिंग करते हैं।
➢ प्रायः अंतरराज्यीय सीमाओं को पार करते समय किसी प्रकार की जटिलता से बचने के लिए, पशुओं को वाहन के चारों ओर तिरपाल कवरेज के साथ छुपाया जाता है जिससे जोकी वेंटिलेशन खराब होता है और अंततः पशु के खराब स्वास्थ का कारण बनता है।
➢ यहाँ तक की बिचौलिए उत्पादक और प्रतिबंधित पशुओं को भी अवैध रूप से तेल टैंकरों में ले जाने तक की चेष्टा करते हैं।
➢ परिवहन के दौरान पशुओं को बिना चारा और पानी की व्यवस्था के भी ले जाया जाना साथ ही नौसिखिए चालक और परिचालक ऐसी स्थिति को और भी जटिल बना देते हैं। जिस तरह से एक वाहन को चलाया जाता है, उससे पशुओं के परिवहन पर बहुत प्रभाव पड़ सकता है। चार पैरों पर खड़े जानवर कम गड़बड़ी से निपटने में सक्षम होते हैं जैसे कि कोनों के आसपास झूलने या अचानक ब्रेक लगाने के कारण। स्थानीय ड्राइवर को एक परिचित मार्ग के साथ सहज ड्राइविंग के लिए चुना जाना चाहिए ।

परिवहन की प्रक्रिया में निम्नलिखित कारक शामिल हैं जो उनके कल्याण की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं-

परिवहन से पूर्व पशुओं से व्यवहार-

पशुओं को आमतौर पर परिवहन से पूर्व गहनता से नियंत्रित किया जाता है। जिससे उन्हे नियंत्रित करने वाले की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। जानवरों के प्रति सही दृष्टिकोण का परिवहन के दौरान पशु कल्याण पर मुख्य तौर पर प्रभाव पड़ता है। हैंडलर के रवैये के परिणामस्वरूप जहाँ एक व्यक्ति जानवर में उच्च स्तर का तनाव पैदा कर सकता है, जबकि यही काम करने वाला दूसरा व्यक्ति बहुत कम या कोई तनाव पैदा किये बिना यह कार्य कर सकता है। लोग पशु व्यवहार का ज्ञान न होने के कारण पशुओं की मृत्यु का और अनावश्यक दर्द और चोट का कारण बन सकते हैं। कर्मचारियों के प्रशिक्षण से पशु के प्रति दृष्टिकोण और व्यवहार में बदलाव लाकर पशु कल्याण को सुदृढ़ किया जा सकता है। पूर्व यात्रा की अवधि-पर्याप्त योजना एक यात्रा के दौरान जानवरों के कल्याण को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक है। यात्रा शुरू होने से पहले यात्रा के लिए जानवरों की तैयारी, सड़क या रेल की पसंद, यात्रा की प्रकृति और अवधि, वाहन और कंटेनर डिजाइन और रखरखाव, आवश्यक दस्तावेज सहित, की तैयारी के संबंध में योजना बनाई जानी चाहिए।

➢ एक बार परिवहन की योजना पूर्ण कर लेने के पश्चात, कुछ ऐसी क्रियाएं होती हैं जो जानवरों को लादने से पहले होनी चाहिए, जिसमें परिवहन सम्बन्धी स्वास्थ्य समस्याओं से बचने के लिए पशुओं के उचित समूह का चयन भी शामिल है।

अपरिचित समूहीकरण- उन्हें एक ट्रक पर लोड करने के लिए तैयार अपरिचित समूहों में अक्सर एक साथ रखा जाता है। यह पाया गया है कि अपरिचित पशुओं को एक साथ रखने से उन्हें एगोनिस्टिक मुठभेड़ का सामना करना पड़ता है जोकी जानवरों के खराब कल्याण के लिए उत्तरदायी होता है क्यूंकि यह अनावश्यक पीड़ा का कारण बनता है जिससे अंततः मांस की गुणवत्ता भी खराब होती है।

➢ अतः यह आवश्यक है की विभिन्न प्रजाति के पशुओं को परिवहन से पूर्व एक साथ रखना चाहिए ताकि उनमे एक प्रकार का परिचय स्थापित हो सके। यदि मवेशी, भेड़, सूअर को परिवहन से पहले 2-3 दिनों के लिए एक साथ रखा जाए तो वे एक दूसरे से परिचित हो जाते हैं और इससे परिवहन का तनाव बहुत कम हो जाता है।

➢ सींग वाले मवेशियों में होने वाली सभी चोटों का आधा कारण सींगों का होना होता है। इससे बचने के लिए आवश्यक है की एक मिश्रित समूह में सींग रहित पशुओं को परिवहन के लिए रखना चाहिए।

➢ यदि पशु हैंडलिंग क्षेत्र और क्रियाओं से परिचित हों तो यह तनाव को काफी कम कर सकता है। परिवहन से पूर्व विश्राम की व्यवस्था पशुओं की शारीरिक या सामाजिक समस्याओं को कम करने में सहायक होती है।
➢ परिवहन के लिए पशुओं के समूह समान आकार के होने चाहिए।
➢ पशुओं की मृदुलता से हैंडलिंग पशुओं में होने वाले अनावश्यक तनाव को काम करती है।
➢ यदि यात्रा की अवधि जानवरों के लिए सामान्य अंतराल (5-6 घंटे) से अधिक हो तो यात्रा पूर्व अवधि में चारा और पानी प्रदान किया जाना चाहिए ।
➢ जब पशु को परिवहन के दौरान या बाद में एक नवीन आहार या पानी के प्रावधान की विधि प्रदान की जानी हो तो आवश्यक है की पशुओं को उस प्रणाली से थोड़ा परिचित होने का समय दिया जाना चाहिए।
➢ प्रत्येक यात्रा से पहले वाहनों और कंटेनरों को अच्छी तरह से साफ किया जाना चाहिए और यदि आवश्यक हो तो पशु स्वास्थ्य और सार्वजनिक स्वास्थ्य उद्देश्यों के लिए उनका इलाज किया जाना चाहिए। परिवहन किए जाने वाले पशुओं का निरीक्षण यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि क्या जानवर परिवहन के लिए फिट है या कहीं उनके कारण रोगों को प्रसारित करने की संभावना है (ऐसे जानवरों को परिवहन नहीं किया जाना चाहिए)।

पशुधन का परिवहन करने वाले वाहनों को भारतीय मानक ब्यूरो (बीएसआई) द्वारा पशु परिवहन के लिए निर्धारित मानकों का पालन करना होता है। नये नियमों के अनुसार पशु परिवहन करने वाले वाहनों की बॉडी में परिवहन किए जाने वाले पशु की प्रजाति के अनुसार प्रत्येक पशु के लिए स्थाई, पृथक चेंबर बनाने को अनिवार्य किया गया है। क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी पशु परिवहन में प्रयोग होने वाले वाहनों के लिए अलग से लाइसेंस जारी करते हैं। इस श्रेणी के तहत लाइसेंस प्राप्त वाहन पशुओं के अलावा किसी अन्य वस्तुओं के परिवहन में इस्तेमाल नहीं किए जा सकते।

विभिन्न पशुओं के लिए वाहन में निर्धारित क्षेत्रफल

पशु	**निर्धारित क्षेत्रफल**
गाय व भैंस	2 वर्गमीटर
घोड़ा	2.25 वर्गमीटर
भेड़ और बकरी	0.3 वर्गमीटर
सुअर	0.6 वर्गमीटर
कुक्कुट	40 वर्ग सेंटीमीटर

2. लादने और उतारने की व्यवस्थायें

परिवहन की प्रक्रिया में लादना और उतारना एक महत्वपूर्ण आयाम है। खराब तरह से डिजाइन किए गए लोडिंग रैंप, हैंडलिंग के दौरान बल का अनावश्यक और अति प्रयोग और साथ ही पशु व्यवहार की समझ न होना पशुओं की शारीरिक क्षति और तनाव दोनों दोनों को बढ़ाता है।

- यदि संभव हो तो लोडिंग और उतराई के लिए अलग व्यवस्था होनी चाहिए। किसी भी प्रकार के पशुधन को उतारने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला ढलान चौड़ा और सीधा होना चाहिए ताकि अवरुद्ध मार्ग न दिखै।
- पशु को बाहर देखने से रोकने के लिए लोडिंग व्यवस्था में ऊँची ओट (मवेशियों के लिए 1.5 मीटर ऊँची) होनी चाहिए।
- अत्यधिक खड़ी रैंप पशुओं को घायल कर सकती हैं। अधिकतम ढलान 20 डिग्री का होना चाहिए। ठोस रैंप पर सीढ़ी चरणों की भी सिफारिश की जाती है।
-

3. यात्रा के बाद पशुओं का उपचार

पशुओं को उतारते समय सामान्य तौर पर अधिक देखभाल की आवश्यकता होती है क्योंकि इस समय पशुओं के थके होने, घायल या रोगग्रस्त होने की संभावना अधिक होती है। इन पशुओं की देखभाल और उपचार में आवश्यक पशु चिकित्सक सेवाओं की व्यवस्था की जानी चाहिए।

- उतारने के बाद बीमार या घायल पशुओं के लिए पर्याप्त चारा और पानी की व्यवस्था के साथ अलग आवास और अन्य उपयुक्त सुविधाएं उपलब्ध होनी चाहिए।
- परिवहन शारीरिक चोट और क्षति के अलावा विभिन्न समस्याओं का कारण बन सकता है जिनमें ट्रांसिएंट एरिथमा, ट्रांसिएंट टिटनी, और शिपिंग बुखार शामिल हैं।

पशुओं के परिवहन से जुड़ी सुगढ़ कल्याणकारी पदतियों को अपनाने से तत्काल लाभ होता है। यह पशु कल्याण के साथ साथ पशु सम्बन्धी लाभ को बढ़ने में भी सहायक होता हैं। अतः परिवहन से पूर्व, परिवहन के दौरान पशुओं को लादते एवं उतारते समय और परिवहन के पश्चात तीनो स्तरों पर पशु कल्याण का ध्यान रखना आवश्यक है।

गर्भावस्था के समय गौवंश का रखरखाव

डॉ. आशुतोष त्रिपाठी, डॉ. अतुल कुमार वर्मा एवं डॉ. मनीष कुमार शुक्ला
सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ

मादा पशुओं में प्रसव उपरांत उत्पादन इस बात पर निर्भर करता है कि पशु की देखभाल गर्भावस्था के दौरान उचित ढंग से की गई है या नहीं इसलिए गौवंश का प्रसव उपरांत उच्चतम उत्पादन प्राप्त करने के लिए ६ से ९ महीने के गर्भकाल के दौरान भी उचित आहार, आवास प्रबंधन एवं अन्य बातों का पूर्णतः ध्यान रखना चाहिए।

आवास एवं रखरखाव

ग्याभिन गौवंश को झुण्ड में खुला ना रखकर अकेला अलग रखना चाहिए ताकि उसका उचित प्रबंधन किया जा सके एवं दूसरे पशुओं से चोट के खतरे से भी बचाया जा सके।
जिस जगह पर गौवंश को बांधा गया है वहा पर मल मूत्र के निकास की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए ताकि वहा नमी ना रहे ।
आवास की सफाई निरंतर होनी चाहिए ।
आवास हवादार तथा बड़ा होना चहिये ताकि पशु टहलकर हल्का व्यायाम कर सकें ।
गर्मी के मौसम में पंखा होना चाहिए तथा आस पास पेड़ पौधे लगा देने चाहिए ।
ज्यादा गर्मी होने पर स्प्रिंकलर या कूलर भी लगाया जा सकता है ।
सर्दियों में ठंडी हवा से बचाना चाहिए तथा खुले स्थानों को ढक देना चाहिए ।
फर्श ज्यादा फिसलन वाला नहीं होना चाहिए तथा फर्श पर मुलायम चीजों जैसेकि पुआल बिछा देना चाहिए जिसे निरंतर बदलते रहना चाहिए ।

पशु पोषण प्रबंधन

गर्भावस्था के दौरान सम्पूर्ण पोषण देना अत्यंत आवश्यक है ।
यदि आहार में कोई बदलाव करना है तो धीरे धीरे किया जाना चाहिए ।
आहार में हरे चारे को जरूर सम्मिलित किया जाना चाहिए ।
प्रत्येक गौवंश के लिए ५० से ७० लीटर साफ ताजा पानी उपलब्ध होना चाहिए ।
ग्याभिन गौवंश को प्रतिदिन ३०- ३५ किलो हरा चारा ५-६ किलो सूखा चारा एवं ३-४ किलो सम्पूर्ण संतुलित राशन दिया जाना चाहिए ।
प्रत्येक गौवंश को प्रतिदिन ५० ग्राम खनिज मिश्रण अवश्य दिया जाना चाहिए ।
अंतिम माह के दौरान राशन के साथ साथ १ से १.५ किलो खली भी दी जानी चाहिए ।

अन्य प्रबंधन एवं रखरखाव

अंतःपरजीवी तथा बाह्य परजीवीओं के निवारण के लिये पशु चिकित्सक का परामर्श लेना चाहिए ।
प्रसव का समय नजदीक आने पर दिन में ४ से ५ बार तथा रात को भी प्रसव के लक्षणों की यथासंभव निगरानी रखनी चाहिए तथा कुछ भी समस्या होने पर पशु चिकित्सक की सहायता ली जा सके ।

शूकर पालन: एक लाभदायक व्यवसाय

डॉ. सतीश कुमार पाठक
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

हमारे देश में कुपोषण की समस्या बहुत ही व्यापक है । तेजी से बढ़ती जनसंख्या के साथ –साथ महँगाई इस समस्या को और विकल बना देती है । शूकर सभी पशुधनों में कुपोषण की समस्या का समाधान करने में सबसे ज्यादा सक्षम है । शूकर पालन ग्रामीण किसानों के लिए रोजगार का एक बेहतर अवसर पैदा करता है । इसके अग्रलिखित लाभ है :-

➢शूकर (pig) का आहार रूपान्तरण अनुपात (Feed conversion ratio) सबसे अच्छा होता है अतः इनके आहार के लिए अतिरिक्त व्यवस्था नही करनी पड़ती है । ये अन्य पशुओं के लिए अखाद्य पदार्थ, बचा-खुचा, खराब, माँस उद्योग का गौण उत्पाद (by product) तथा कूड़ेदान में फेका गया होटल या घर का बेकार खाने का भी उपभोग कर लेते है ।

➢ शूकर पालन आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए रोजगार का एक साधन प्रदान करता है ।

➢शूकर की विकास दर अन्य पशुओं की तुलना में बहुत तेज होती है और ये एक ब्यात में 10 से 14 बच्चे देती है ।

➢शूकर के आवास के लिए कोई विशेष व्यवस्था नही करनी पड़ती है । इसमे बहुत थोड़ी पूँजी से ही काम चल जाता है ।

➢शूकर का प्रबंधन बहुत ही आसान है ।

➢शूकर के माँस की माँग देश और विदेश दोनों में काफी है ।

➢शूकर पालन से लागत और लाभ का मिलना बहुत ही शीघ्र शुरू हो जाता है ।

➢शूकर सबसे ज्यादा माँस देने वाला पशु है । (dressing percentage 65-80%)

➢शूकर वसा का संग्रहण बहुत ही तीव्र गति से करते है, अतः इसकी माँग मुर्गी आहार, साबुन, पेन्ट एवं अन्य दूसरे रासायनिक उद्योगों में बहुत है ।

➢शूकर का माँस अन्य पशुओं की तुलना में पोषण से भरपूर होता है ।

राष्ट्रीय पशुधन मिशन (एनएलएम)

डॉ. सतीश कुमार पाठक
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

वर्ष 2014-15 के दौरान शुरू किए गए राष्ट्रीय पशुधन मिशन का उद्देश सतत, सुरक्षित और न्यायसंगत पशुधन विकास के माध्यम से पशुपालकों और किसानों, विशेष रूप से भूमिहीन, छोटे और सीमांत किसानों के लिए आजीविका के अवसरों में वृद्धि करने और उनके जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए इस योजना को तैयार किया गया था। इसके चार उप-मिशन अग्रलिखित हैं:

- **पशुधन विकास संबंधी उप-मिशन**
- **पूर्वोत्तर क्षेत्र में सुअर विकास संबंधी उप-मिशन**
- **चारा और आहार विकास संबंधी उप-मिशन**
- **कौशल विकास, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और विस्तार संबंधी उप-मिशन**

पशुधन विकास संबंधी उप-मिशन:

पशुधन विकास संबंधी उप-मिशन के तहत उत्पादकता बढ़ाने, जुगाली करने वाले छोटे पशुओं, सुअरों और कुक्कुट हेतु नई नवाचारी प्रायोगिक परियोजना, उद्यमिता विकास और रोज़गार सृजन (बैंक योग्य परियोजनाएं), आधुनिकीकरण, स्वचालन और जैव सुरक्षा, संकटापन्ना नस्लों का संरक्षण, लघु पशुधन विकास, ग्रामीण बूचड़खानों, मृत पशुओं और पशुधन बीमा के संबंध में राज्य फार्मों की बुनियादी अवसंरचना को सुदृढ़ करने की व्यवस्था है।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में सुअर विकास संबंधी उप-मिशन:

पूर्वोत्तर राज्यों की ओर से इस क्षेत्र में सुअर पालन के सर्वांगीण विकास के लिए सहायता प्रदान करने संबंधी मांग लंबे समय से की जा रही है। एनएलएम के तहत पहली बार पूर्वोत्तर क्षेत्र में सुअर विकास संबंधी उप-मिशन की व्यवस्था की गई है, जिसमें भारत सरकार राज्य सुअर पालन फार्मों और जर्मप्लाज्म के आयात हेतु सहायता प्रदान करेगी ताकि अंततः जनता को इसका लाभ मिल सके क्योंकि यह आजीविका से जुड़ा हुआ है और यह 8 पूर्वोत्तर राज्यों में प्रोटीन युक्त भोजन प्रदान करने में योगदान देता है।

चारा और आहार विकास संबंधी उप-मिशन:

चारा और आहार विकास संबंधी उप-मिशन पशु चारा संसाधनों की कमी संबंधी समस्याओं का समाधान करेगा, ताकि पशुधन क्षेत्र को बढ़ावा देते हुए इसे भारत के लिए एक प्रतिस्पर्धी उद्यम बनाया जा सके और साथ ही इसकी निर्यात क्षमता का उपयोग किया जा सके। इसका प्रमुख उद्देश्य घाटे को कम करके शून्य तक लाना है।

कौशल विकास, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और विस्तार संबंधी उप-मिशन:

पशुधन कार्यकलापों के लिए क्षेत्रीय स्तर पर विस्तार मशीनरी बहुत कमजोर है। परिणामस्वरूप, किसान, अनुसंधान संस्थानों द्वारा विकसित तकनीकों को अपनाने में सक्षम नहीं हैं। नई प्रौद्योगिकियों और पद्धतियों के उद्भव के लिए हितधारकों के बीच संपर्क की आवश्यकता है। यह उप-मिशन किसानों को व्यापक रूप से आगे बढ़ने में सक्षम बनाएगा। एनईआर राज्यों सहित सभी राज्य विभिन्न घटकों और सतत पशुधन विकास के लिए एनएलएम के तहत इन घटकों का चुनाव करने की स्वतंत्रता का लाभ उठा सकते हैं।

निधीयन पद्धति:

पूर्वोत्तर और हिमालयी राज्यों को छोड़कर केंद्र और राज्य सरकार के बीच लागत साझा करने के 60:40 के अनुपात पर राष्ट्रीय पशुधन मिशन उप-योजना कार्यान्वित की जा रही है। पूर्वोत्तर और हिमालयी राज्यों में यह अनुपात 90:10 है और संघ राज्य क्षेत्रों के मामले में 100 प्रतिशत है। उद्यमशीलता विकास और रोजगार सृजन (ईडीईजी) और लघु पशुधन संस्थान घटक को 100% केंद्रीय सहायता के आधार पर लागू किया जा रहा है। तथापि, ईडीईजी एक लाभार्थी उन्मुख योजना है, जिसमें पात्र लाभार्थी को संपूर्ण सब्सिडी वाला भाग (सामान्य के लिए 25% और अ.जा. एवं अ.ज.जा. लाभार्थी के लिए 33.33%) नाबार्ड के माध्यम से केंद्र सरकार द्वारा प्रदान किया जाता है। ईडीईजी के तहत पूर्वोत्तर/पर्वतीय/वामपंथी उग्रवाद (एलडब्ल्यूई) तथा दुर्गम क्षेत्रों में बैक एंडेड सब्सिडी 35% से 60% के बीच होती है।

स्रोत: **मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय, भारत सरकार**

मुर्गियों की वर्षा ऋतु में देखभाल (Management of Poultry in Rainy Season)

डॉ. सतीश कुमार पाठक
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

वर्षा ऋतु में मुर्गियों के लिये अग्रलिखित विशेष प्रबन्धन करना पड़ता है :

➢हीटर या प्रदीप्त (fluorescence) प्रकाश का प्रयोग करे । मुर्गियों को मुख्य रूप से चूजों को गर्म रहने की आवश्यकता है क्योंकि चूजे अपने शरीर के तापमान को नियन्त्रित करने में असमर्थ है । इसके साथ-साथ प्रदीप्त प्रकाश अंडे देने वाली मुर्गियों के उत्पादन को बढ़ा देता है ।

➢मुर्गियों के आहार में तेल या वसा का प्रयोग करे । मुर्गियाँ को ठंड होने पर ज्यादा भूख लगती है । अत: तेल या वसा का प्रयोग अनावश्यक रूप से आहार उत्पादन की लागत को कम कर सकते है ।

➢परजीवीनाशक (dewormer) का प्रयोग करे । बारिश के समय पानी में कई तरह के परजीवी के होने का खतरा बढ़ जाता है । अतः आन्त्र (intestine) के संक्रमित होने से बचाने के लिए परजीवीनाशक का प्रयोग आवश्यक हो जाता है । Piperazine जैसे परजीवीनाशक प्रत्येक दूसरे या तीसरे महीने देना चाहिए ।

➢सूखे बिछौने का प्रयोग करना चाहिए । बारिश के समय आद्रता (humidity) बढ़ने के कारण मुर्गियों के बिछौने का सूखा रहना आवश्यक है । गीला बिछौना कई तरह के संक्रमण का कारण बन सकता है ।

➢विटामिन ई और सेलेनियम की अल्प मात्रा उनकी रोगों के प्रति लड़ने की क्षमता को बढ़ा देती है ।

➢बारिश में टिकाकरण का विशेष ध्यान देना चाहिये क्योकि जीवाणु (bacteria), विषाणु (virus) इत्यादि के संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है ।

➢मुर्गियों के आवास का प्रबन्धन ऐसा होना चाहिये, जिससे बारिश के पानी का भराव न हो ।

➢मुर्गियों के आहार को वर्षा ऋतु में माइकोटॉक्सिन से बचाने के लिए नमी से दूर रखना आवश्यक होता है ।

- टॉक्सिन बाइंडर (toxin binder) पदार्थ मुर्गियों के आहार में वर्षा ऋतु में प्रयोग करना आवश्यक है ।
- वर्षा ऋतु में मुर्गियों को दिया जाने वाला पानी के गंदा होने का अवसर बढ़ जाता है, ये संक्रमण का कारण बन सकते है अतः साफ-सुथरा पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिये ।
- चूहों की सक्रियता वर्षा ऋतु में बढ़ जाती है, अतः इनसे होने वाली बीमारियों का नियंत्रण करने के लिए मुर्गियों के आवास का साफ- सुथरा रखना आवश्यक है ।

लेख भेजने के लिए निर्देश :

1. लेख हिन्दी में मंगल फॉन्ट एवं microsoft word में होने चाहिये ।
2. लेख पशुपालन से संबन्धित होना चाहिये।
3. लेख के प्रकाशन का निर्णय संपादक का होगा।
4. लेख का प्रकाशन निः शुल्क होगा ।
5. लेख को प्रकाशन के लिए ईमेल आई डी pashupalakmitra1@gmail.com पर भेजना होगा ।
6. लेखक को निम्न प्रारूप में एक स्वहस्ताक्षरित प्रमाण पत्र लेख के साथ सलग्न करना होगा **प्रमाणित किया जाता है कि संलग्न लेख...शीर्षक..... लेखक ...लेखक का नाम ..... द्वारा लिखित एक मौलिक, अप्रकाशित रचना है, तथा इसे प्रकाशन के लिए किसी अन्य पत्रिका में नही भेजा गया है।**
7. लेख में वर्णित सूचनाओं का दायित्व लेखक का होगा , संपादक का नही